खूँटियों पर टँगे लोग : एक मूल्यांकन

- डॉ. इशरत खान

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का कवि रूप में प्रथम परिचय तारसप्तक में मिलता है। इसके साथ ही साथ नयी कविता के कवियों मैं उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके अब तक के प्रकाशित काव्य संग्रहों में काठ की घंटियाँ (गद्य-पद्य संकलन) 'तीसरे सप्तक' में संग्रहीत कुछ कविताएँ बाँस का पूल, एक सूनी नाव - कुआनी नदी, जंगल का दर्द और खूँटियो पर टँगे लोग आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

"खूँटियों पर टँगे लोग" नामक काव्य संग्रह सन् १९८२ में प्रकाशित हुआ है। इसमे सन १९७६ से १९८१ के मध्य ७ लिखी गई कविताओं का संग्रह किया गया है।

सर्वेश्वर ने इस संग्रह की भूमिका में खिला है -

(यह पीडा कवि के आत्म से शुरू होकर समाज तक जाती है और फिर समाज से कवि के आत्म तक आती है, और इस तरह कवि और समाज को पृथक न कर एक करती हुई काव्य - व्यक्तित्व को विराट कर जाती है)

आपने, अपने काव्य के माध्यमसे समाज का यथार्थ चित्र अंकित करने का प्रयत्न किया है। वह साधारण जनता की पीडा को अपनी पीडा बना लेते हैं।

खूँटियों पर टंगी साधारण जनता यातना को भोगती रहती है और उसके चाहने पर भी, मुक्ति नहीं मिल सकती है क्योंकि उसे विवश होकर रोज रोज की यातना भोगनी पडती है। जैसे 'हंजूरी' नामक कविता में हंजूरी की विवशता को इस प्रकार दिखाया है।

"काम न मिलने पर
अपने तीन भूखे बच्चों को लेकर,
कूद पडी हंजूरी कुएँ में,
कुएँ का पानी ठंडा था,
बच्चों की लाश के साथ
निकाल ली गई हंजूरी कुएँ से,
बाहर की हवा ठंडी थी,
हत्या और आत्महत्या के अभियोगमें,
खडी थी हंजूरी अदालत में,
अदालत की दीवारें ठंडी थी।

यहाँ सर्वेश्वर के भाव निराला के भावों से मिलते जुलते दिखाई देते है। "दृष्टि जो मार खा रोई नहीं।" इस समाज में तो रोने की भी सुविधा नहीं है। इस जीवन में सुविधा है तो केवल पत्थर तोडने की। इसी प्रकार हंजूरी के जीवन को भी यातना दे देकर धीरे धीरे मारना है। सर्वेश्वर की कविता सच्चे अर्थों में प्रगतिशील चेतना की कविता है। प्रगतिशील जीवन-दृष्टि की सबसे बडी पहचान जनता के कल्याण की भावना से रचना सृजन करना।

"खूँटियों पर टंगे लोग" संग्रह की एक कविता है, "पिछडा आदमी" जिसका व्यंग्य है कि यह समाज ऐसे पिछडे कहे जाने वाले, मजदूर और ईमानदार लोगों के बूते पर चलना है, जो सचमुच कर्म करते हैं, वे दिखावा कभी नहीं करतें हैं, अब कवि कहता हैं -

"जब सब चलते थे तो वह
पीछे रह जाता था...
किन्तु जब गोली चली

इसी तरह कवि दु:ख भोगने वाली और कुछ न कहनेवाली जनता को काठ भी घंटियाँ कहता हैं और उनके दु:ख दर्द को अपनी पीडा मानकर कविता के माध्यम से समाज के सक्षम रखता है।

सर्वेश्वर के हृदय में गरीब मजदूर के प्रति पूर्ण सहानुभूति है। जब वह, बेडौल दुमडे जूते (जो तारकोल आरै बजरी से, काम करते -करते सम गया है) के सामने नतमस्तक होते हैं तो एक तरह से वह उस मजदूर के श्रध्दा भाव दिखाते है जो रात -दिन इस तारकोल और बजरी में काम करता रहा -

"मैं उन पैरों के बारे में सोचता हूँ,
और
श्रध्दा से नत हो जाता हूँ।"

सर्वेश्वर जी ने अपनी कविता में शहरीं और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र अंकित किया है। शहर की अपेक्षा ग्रामीण जीवन का चित्रण करने में सर्वेश्वर जी विशेष सफल हुए हैं। इसी कारण उनको गाँव के परिवेश उसकी गरीबी में पीढी दर पीढी घिसटती हुई जिन्दगी के प्रति गहरी सहानुभूति है। 'गांव का सपेरा' नामक कविता में गांव का सपेरा, साँपो का खेल दिखाकर लोगों का मनोरंजन करता है किन्तु वह आजीवन गरीबी कर्ज और उधार की जिन्दगी जीने वाली की व्यथा का नाम है। इन्हें लोग बुरा भला

कहते हैं और उधार माँगते समय उनके पूर्वजों का नाम लेकर उन्हें गालियाँ देते हैं। कवि हृदय उनके प्रति संवेदना और करूणा से भर उठता है।

अपनी कविता के माध्यम से गरीब जिन्दगी के घिसटते हुए रूप का जो चित्र कवि ने खींचा है, वह सही मायने में मानवतावादी है।

अपनी पूर्व कविताओं में कवि नियति पर विश्वास नहीं करता है। वह कहता है -

"जीवन और मृत्यु के बीच जो भूमि है वह नियति की नहीं मेरी है"

परन्तु "खूँटियो पर टंगे लोग" में वह नियति और यथास्थिति को स्वीकार कर लेता है - पीडा और विवशता के साथ -

"खूँटियों पर ही टँगा
रह जाएगा क्या आदमी
सोचता उसका नहीं
यह खूँटियों का दोष है।"

कवि की दृष्टि में शहरी जीवन भी बेजान हो गया है। वहाँ प्यार घृणा, समर्पण, विद्रोह, विश्वास, अविश्वास सब ही बेजान को गये है। फिर भी कवि को जीवन के प्रति आस्था है। वह कहता है कि "अब मैं सूरज को डूबने नहीं दूँगा।"

वह हार मानना स्वीकार नही करता. वह समस्या का समाधान ढूँढने की प्रतिज्ञा करता है -

"सूरज को यहीं रहना होगा,
यहीं हमारी साँसों में हमारी रगों में,
अब किसी सूरज को डूबने नहीं दूँगा"

"खूँटियों पर टंगे लोग" काव्य - संग्रह की कुछ कविताएँ राजनीतिक पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई है। राजनीति आज के लेखन का एक प्रमुख विषय है। कविता उसे अपनी लडाई में प्रतिद्वन्द्वी के रूप में मानती है। सर्वेश्वर ने बहुत ईमानदारी के साथ सरकारी अव्यवस्था और भ्रष्टाचार का वर्णन किया है और साधारण जनता को इनके विरोध में क्रान्ति करने की ओर आवाज उठाने की प्रेरणा भी दी है।

सर्वेश्वर ने वर्तमान शासकों की शोषक संस्कृति उसके दबाव व उत्पीडन के साथ-साथ जनता के व्यापक प्रतिरोध और व्यवस्था परिवर्तन में उसकी सक्रिय हिस्सेदारी पर नजर रखी है। इस चेतना के स्वरूप जनता भी जुलूस, हडताल, आन्दोलन आदि में भाग लेने लगी और उन्होंने लिखा -

"अन्याय और यातना की सीमा,
जब पार हो जाती है,
तो बेजान में ही सबसे पहले जान आती है।"

हम जानते है कि हमारे देश में किसानों को बेजान के रूप में देखा जाता है। उन्हें यह विश्वास है कि,

"अब तुम बच नहीं सकते
बहुत देर हो चुकी"

उनके इस निर्णय से यह साफ जाहीर होता है कि धीरे-धीरे वे इस जरूरत को समझने लगे थे कि लोक तांत्रिक अधिकारों के लिए लडने वाली व्यापक जनता का, शोषक वर्ग के विरूध्द खडा होने के अतिरिक्त और कोई रास्ता रही नहीं हो सकता है।

इसके पश्चात ही उन्होंने महसूस किया कि अब रूकने का समय नहीं है। उन्होंने तमाम लोकतांत्रिक शक्तियों को ललकारा -

"आहिस्ता मत चलो,
सोचना भय को निमंत्रण देना है,
मैं जानता हूँ तुम्हारे हाथों में,
अभी कोई झंडा नहीं है
भूखे और असहाय आदमी को
किसी झंडे की जरूरत भी नहीं होती,
अपने उस साथी की,
खून से रंगी कमीज को एक,
बांस में लपेट उँचा उठा लो"

पिछली क्रान्ति के इतिहास ने, उन्हें बता दिया था कि संयुक्त रूप से चलने पर ही सफलता मिल सकती है - जैसे -

"आहिस्ता मत चलो,
दौडो
सब एक साथ मिलकर दौडो।"

"उंगलियों में चुभे कांटे" कविता में भी एकता पर जोर दिया गया है -

"पचपन करोड सिर,
एक साथ पटके जाने पर,
टूट जायेगा हिमालय,
यह तो है एक अन्यायी शासन,
का जर्जर द्वार,
बढो भेशुमार,
गन्दी बस्तियों झोपडों, गटरों से निकल,
बनाकर कतार,
बनकर विराट आरे की धार।"

हिन्दी कविता के लिए यह चेतना अद्‌भुत चेतना थी।

सर्वेश्वर ने आज के हिन्दी कवियों के लिए एक सही दिशा और जमीन का निर्माण किया है। अपनी गलतियों से

सीखते हुए विशाल व्यापक जनता के न्यायपूर्ण कार्यों को देखते हुए वे अपने को जहाँ तक ले आए है, वह वर्तमान हिन्दी कविता की एक उपलब्धि है -

"हम तो जमीन ही तैयार कर पायेंगे,
क्रान्ति बीज बोने कुछ बिरले हैं,
आएंगे,
हरा भरा वही करेंगे आपको
सिलसिला मिलेगा आगे क्रम को।"

"खूँटियों पर टंगे लोग" काव्य - संग्रह की 'फसल', 'उम्र ज्यों ज्यों बढती है', 'दस्ताने', 'जूता', 'आहिस्ता मत चलो', 'उंगलियों में चुभे कांटे', 'प्रौढ शिक्षा', 'जरूरत है सरकारी जासूस की', 'अब मैं सूरज को डूबने नहीं दूँगा, आदि कविताएँ भी महत्त्वपूर्ण है।

नई कविता में कला और शिल्प के भी नये रूप उभरे है। भाषा, छन्द, अलंकार और प्रतीक आदि के नये -नये प्रयोग हुए है। काव्य रूपो में परम्परागत काव्य रूपों के साथ नये रूपों की उद्‌भावना की गई और कुछ पुराने काव्य : रुपों का परिष्कार कर उन्हें नये युग की नई अनुभूतियों के अनुरूप बनाया गया है।

भाषा के क्षेत्र में इस युग की उपलब्धियाँ बडी समृध्द, सशक्त और सार्थक रही है। इस युग के कवि सर्वेश्वर जी ने भाषा में, शास्त्रीयता को नहीं स्वीकार किया। उन्होंने भाषा और उसके शब्दों का संस्कार कर, उसे नई अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाया। उसे नये प्रतीक , नये बिम्ब और नया सौन्दर्य बोध प्रदान किया।

सर्वेश्वर ने जनता की बोलचाल की भाषा को अपनाया है। उनकी भाषा सीधी सादी गद्य की भाषा है, जैसे -

"धूल पर धूल,
इस कदर जमती जा रही है,
कि अब मैं खुद,
अनपना रंग भूल गया हूँ।

सर्वेश्वर ने अपनी काव्य भाषो में ग्राम्य शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे - दाहिदा, झाँझ, हुहुक, फोड, छटपटाहट और खुरफुहसाहट आदि।

कदर, अरसे, दरख्तों, लाश, जिस्म और खौफनाक आदि उर्दू शब्दों के भी प्रयोग किये है।

छन्द विधान के क्षेत्र में, सर्वेश्वर ने मुक्त छन्द को अपनाया है। इसका परिणाम यह हुआ कि इनकी कविताएँ गद्य की सी बन गयी है। परन्तु सर्वेश्वर की कविता, संगीत और लय की एक मनोरम झंकार उत्पन्न कर देती है। इस प्रकार सर्वेश्वर की कविता मुक्त छन्द में लिखी होने के बावजूद उसमें संगीत और लय का पूर्ण समावेश रहता है।

सर्वेश्वर ने कविता में नये बिम्ब और प्रतीकों को अपनाया है। बिम्ब का अर्थ है, चित्र। सर्वेश्वर की कविता के हर लाइन में एक चित्र है। वह भावों का ऐसा चित्रण करते है कि उसका सम्पूर्ण बिम्ब उभर कर पाठक के समक्ष उपस्थित हो जाता है।"

"ऊँची- सीधी, चिकनी है,
दीवार
ऊपर कटीले तार,
लेकिन करना ही है,
उसे पार
इन्तजार के बाहर भूखे चेहरों का,

इसमे एक ओर सरकार की शोषक व्यवस्था का चित्र सामने आता है और दूसरी ओर उससे शोषित जनता का चित्र सामने आता है। अन्त में सर्वेश्वर कहते है कि इस व्यवस्था को बदल डालो जिसमें साधारण जनता का अहित हो रहा है।

नये बिम्बों के साथ ही साथ सर्वेश्वर ने नये प्रतीकों का भी सहारा लिया है। प्रतीक का अर्थ है शब्दों के पुराने अर्थ के स्थान पर नवीन अर्थों का प्रयोग। समर्थ रचनाकार प्रतीकों को नया सन्दर्भ देकर नये अर्थ का संवाहक बना देता है और इससे वे अपने नये भावचित्रों द्वारा सम्प्रेषण की क्षमता को आभिवृध्द कर देते हैं।

सर्वेश्वरजी ने सडा कपडा ढका कुआँ, खंडित मूर्तियों के प्रयोग से आज के जीवन की विवशता को सफलता पूर्वक व्यक्त किया है।

अप्रस्तुत योजना के अन्तर्गत सर्वेश्वर ने विसंगति अलंकार का ही प्रयोग किया है, जिसे शास्त्रीय भाषा में विरोधाभास कहते है -

"बहुत छोटे छेद होते है बांसुरी में,
जिनके सहारे दिशाएँ
कर उठती है चीत्कार,
और घोडो मशीन गन का,
जरा-सा दबते ही
कर देता है महासंहार।"

यहाँ बांसुरी का प्रयोग अहिंसा 'प्यार माधुर्य' के लिए तथा गन का प्रयोग हिंसा (सरकारके) लिए किया गया है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने काव्य - भाषा का नवीन संस्कार कर उसे और अधिक सशक्त, समृध्द और सहज रूप प्रदान करने का प्रयास किया है जो हिन्दी साहित्य में गौरव के साथ याद किया जाता रहेगा।

□□□